

विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।

—खलील जिब्रान

स्वदेशी माइक्रोचिप: आत्मनिर्भरता की ओर ऐतिहासिक कदम

भारत ने अपनी पहली स्वदेशी चिप बना लेने की घोषणा की है। इसका नाम भारतीय वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के नाम पर विक्रम दिया गया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी णैषण्व ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री मोदी को इसरो द्वारा विकसित ‘विक्रम 32-बिट प्रोसेसर’ भेंट किया। इसरो की सेमीकंडक्टर लैब में निर्मित यह चिप, अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान की चरम स्थितियों में उपयोग के लिए तैयार किया गया यह पहला पूर्णतः भारत में निर्मित प्रोसेसर है। विक्रम चिप को इस हिसाब से बनाया गया है कि वह अत्यधिक तापमान और अंतरिक्ष की विषम परिस्थितियों का सामना कर सके। यह चिप पर्याप्त मात्रा में मेमोरी को संभाल सकती है और रॉकेटों की लॉन्चिंग के लिए जरूरी जटिल निर्देशों का पालन कर सकती है। इन खूबियों को वजह से इस चिप को रक्षा, विमानन, ऑटोमोटिव और ऊर्जा जैसे जरूरी क्षेत्रों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर सेमीकंडक्टर बाजार अब 600 अरब डॉलर का हो चुका है और आने वाले सालों में इसके एक हजार अरब डॉलर से अधिक का हो जाने की उम्मीद है। सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत के आगे बढ़ने की गति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत इस एक हजार अरब डॉलर के बाजार में अहम् हिस्सेदारी हासिल कर सकेगा। इस दिशा में ‘सेमीकॉन’ कार्यक्रम साल 2021 में शुरू किया गया था। 2023 में देश के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट को स्वीकृति दी गई। 2024 में कई और प्लांटों को स्वीकृति मिली और 2025 में पांच अन्य परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई। इस समय फिलहाल दस सेमीकंडक्टर परियोजनाएं चल रही हैं, जिनमें 18 अरब डॉलर यानी 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हो चुका है। नोएडा और बंगलुरु में विकसित किए जा रहे डिजाइन सेंटers में दुनिया की कुछ सबसे आधुनिक चिपों पर काम हो रहा है जिनमें प्रत्येक चिप में अरबों ट्रांजिस्टर समा सकते हैं। सोजी पावर कंपनी के पायलट प्लांट में इस साल अगस्त में काम शुरू हो चुका है और एक अन्य पायलट प्लांट में काम जल्द ही शुरू होने वाला है। इसके अलावा, टाटा और माइक्रोन के टेस्ट चिपों का पहले से ही उत्पादन हो रहा है। अनुमान है कि इस साल के अंत तक भारत में चिपों का वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो जाएगा। सेमीकंडक्टर चिपों का उत्पादन शुरू करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 2021 में इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) शुरू किया था। इसके लिए सरकार ने 76 हजार करोड़ रुपये की उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (फैलआउट) योजना शुरू की थीजिसके तहत, स्टार्टअप और इनोवेटर्स की मदद करने के लिए 23 चिप डिजाइन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई।

माइक्रोचिप एक बहुत ही छोटी इलेक्ट्रॉनिक चिप होती है, जिसे इंटीग्रेटेड सर्किट (आईसी) भी कहते हैं। इसमें हजारों, लाखों या अरबों ट्रांजिस्टर, रेसिस्टर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक घटक एक ही सिलिकॉन के टुकड़े पर बनाए जाते हैं। आसान भाषा में कहें तो माइक्रोचिप एक छोटा-सा दिमाग है जो किस्ाई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को सोचने-समझने और काम करने की क्षमता देता है। यह ज्यादातर सिलिकॉन से बनाई जाती है और वह आकार में बहुत ही छोटी (कुछ मिलीमीटर की) होती है, लेकिन इसकी क्षमता बहुत ज्यादा होती है। इसका काम डेटा को प्रोसेस करना, स्टोर करना और निर्देशों के हिसाब से काम करना। इसका उपयोग कंप्यूटर, मोबाइल, टीवी, कार, एप्लीएम कार्ड, स्मार्टफोन, रोबोट, मेडिकल उपकरण, यहां तक कि पालतू जानवरों की पहचान के लिए भी किया जाता है। माइक्रोप्रोसेसर एक तरह से कंप्यूटर/मोबाइल का दिमाग होता है। इसी प्रकार माइक्रोकंट्रोलर वॉशिंग मशीन, माइक्रोवेव जैसे उपकरणों को भी नियंत्रित करता है। मेमोरी चिप डेटा को स्टोर करती है।

वर्तमान में दुनिया में अगर तेल को ऊर्जा का ईंधन माना जाए तो माइक्रोचिप को आधुनिक तकनीक का वाहक कहा जा सकता है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, इंटरनेट, अंतरिक्षयान, चिकित्सा उपकरण, बैंकिंग व्यवस्था, स्मार्ट कारों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकहर जगह माइक्रोचिप निर्णायक भूमिका निभाती है। डिजिटल युग में इसकी अहमियत इतनी गहरी है कि बिना माइक्रोचिप के आधुनिक जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस पृष्ठभूमि में भारत द्वारा अपनी पहली स्वदेशी माइक्रोचिप ‘विक्रम’ का निर्माण केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक संप्रभुता की दिशा में क्रांतिकारी पहल है। 21वीं सदी में जो भी तकनीकी क्रांति हम देख रहे हैं, जैसे 5जी, क्वांटम कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एएआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स या स्वचालित वाहन-उन सबका केंद्र माइक्रोचिप ही है। विश्व स्तर पर अमेरिका, ताइवान, दक्षिण कोरिया और जापान इस क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। ताइवान की कंपनी

‘विक्रम’ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका पूरी तरह स्वदेशी डिज़ाइन है। स्वदेशी डिज़ाइन होने से साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण में भी यह मददगार है। कह सकते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का यह स्तंभ है। यह भारत को आयात-निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इससे रक्षा उपकरणों और संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी चिप्स पर निर्भरता खत्म होगी जिससे अरबों डॉलर का विदेशी मुद्रा व्यय बचेगा और देश में निवेश बढ़ेगा। स्वदेशी चिप होने से भारतीय स्टार्टअप और उद्योग नए प्रयोग कर पाएंगे और सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा।

भारत में अपनी चिप बनाने के लिए नवाचार की क्षमता लंबे समय तक सीमित रही। इससे आपूर्ति श्रृंखला का संकट भी रहा। कोविड महामारी के दौरान वैश्विक चिप संकट ने भारत सहित पूरी दुनिया को हिला दिया था। यही कारण था कि भारत सरकार ने सेमीकंडक्टर मिशन की शुरुआत की और आत्मनिर्भर भारत अभियान में सेमीकंडक्टर को शीर्ष प्राथमिकता दी। इसी कड़ी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास के शक्ति माइक्रोप्रोसेसर प्रोजेक्ट से जुड़े वैज्ञानिकों ने भारत की पहली स्वदेशी माइक्रोचिप ‘विक्रम’ का विकास किया है। यह उपलब्धि केवल एक तकनीकी परियोजना नहीं बल्कि भारतीय आत्मनिर्भरता की दिशा में मील का पत्थर है। ‘विक्रम’ चिप का नाम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई के सम्मान में उचित ही रखा गया है। ‘विक्रम’ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका पूरी तरह स्वदेशी डिजाइन है। विक्रम को भारतीय शोधकर्ताओं ने डिजाइन करके विकसित किया है। यह ओपन-सोर्स ऑफ़्टेक्नर है जो आरआईएससी-सी पर आधारित है, जिससे भविष्य में उस पर स्वतंत्र रूप से विकास संभव है जो इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएगा। यह किसानों और ऊर्जा दक्ष है अर्थात विक्रम चिप कम ऊर्जा खपत और उच्च प्रदर्शन के साथ कार्य कर सकती है। इसी कारण इसे रक्षा, संचार, शिक्षा, ऑटोमोबाइल और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स तक में उपयोग किया जा सकता है। स्वदेशी डिजाइन होने से साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण में भी यह मददगार है। कह सकते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का यह स्तंभ है। यह भारत को आयात-निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इससे रक्षा उपकरणों और संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी चिप्स पर निर्भरता खत्म होगी जिससे अरबों डॉलर का विदेशी मुद्रा व्यय बचेगा और देश में निवेश बढ़ेगा। स्वदेशी चिप होने से भारतीय स्टार्टअप और उद्योग नए प्रयोग कर पाएंगे और सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विश्व में सेमीकंडक्टर की मांग लगातार बढ़ रही है। अनुमान है कि 2030 तक यह बाज़ार एक ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक का हो जाएगा। भारत इस विशाल अवसर का लाभ उठा सकता है क्योंकि भारत के पास सहले से ही मजबूत आईटी सेक्टर है, प्रचुर मानव संसाधन है, बड़ी घरेलू वैश्व है और साथ में सरकारी प्रोत्साहन योजनाएं मौजूद है। ‘विक्रम’ चिप का निर्माण भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण खिलाडी बना सकता है। मगर इस राह में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। यहां निर्माण अवसरचरना की कमी है। भारत में बड़े पैमाने पर चिप फैब्रिकेशन यूनिट अभी नहीं है। सेमीकंडक्टर उद्योग पूंजी-सघनता वाला उद्योग है। इसमें अरबों डॉलर की आवश्यकता होगी। अमेरिका, चीन, ताइवान और कोरिया इस क्षेत्र में पहले से बहुत आगे हैं। इस अकेले उद्योग के लिए लाखों कुशल इंजीनियरों और तकनीशियनों की भी जरूरत होगी। साथ ही वैश्विक राजनीतिक दबाव को भी झेलना होगा क्योंकि सेमीकंडक्टर उद्योग पर भूराजनीतिक खींचतान का असर भारत पर भी पड़ सकता है। भारत को ‘विक्रम’ जैसी परियोजनाओं की केवल प्रतीकात्मक उपलब्धि न मानकर इसे बड़े पैमाने पर उद्योग में बदलना होगा। इसके लिए सरकार को लंबी अवधि की नीति और वित्तीय सहायता जारी रखनी होगी। साथ ही निजी क्षेत्र और स्टार्टअप को शोध और नवाचार के लिए प्रोत्साहित करना होगा और देश के विश्वविद्यालयों और संस्थानों को सेमीकंडक्टर शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान देना होगा। ‘विक्रम’ केवल एक माइक्रोचिप नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह भारत को उपभोक्ता से निर्माता और नवोन्मेषक में बदलने का अवसर देता है। जिस तरह 20वीं सदी में अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा ने राष्ट्रों को ताकत तय की थी, उसी तरह 21वीं सदी में माइक्रोचिप और सेमीकंडक्टर तकनीक यह भूमिका निभाएंगी। भारत का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम इस अवसर को किस हद तक रणनीतिक दृष्टि से संभालते हैं। अगर ‘विक्रम’ को उद्योग, शिक्षा और नीतिगत स्तर पर व्यापक सहयोग मिले तो यह न केवल भारत की तकनीकी दिशा बदलेगा बल्कि विश्व मंच पर भारत को अग्रणी स्थान दिला सकता है।

—अतिथि संपादक,

राजेन्द्र बोड़ा

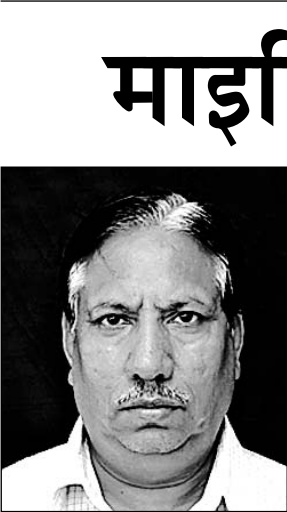
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)



डॉ. निमिषा गौड़

भाषा मनुष्य के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे सुंदर माध्यम है। यही वह साधन है जो हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने का रास्ता दिखाता है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने परिवार, समाज और राष्ट्र या स्थानीय भाषाओं की जगह अंग्रेजी के देशों को एक भावनात्मक सूत्र में बांध देता है। किसी भी क्षेत्र की भाषा, वहां की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं का सजीव प्रतिबिंब होती है। यह हमारी विरासत की अभिव्यक्ति करती है और जनमानस को अपनी जड़ों से जोड़ती है। भाषा के माध्यम से विचार प्रकट होते हैं और यही जुड़ाव राष्ट्र की पहचान बन जाता है। यही पहचान राष्ट्र के रूप में स्थानांतरित हो सकती है। भारत वासियों की भाषा और विचार, हमारी सनातन संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य देन हैं। भारतीयों की राष्ट्रीय एकात्मता हमारी सांस्कृतिक धरा के साथ अनादिकाल से प्रवाहित होती आ रही है। इस सांस्कृतिक प्रवाह में संस्कृत को सभी भारतीय भाषाओं की जननी माना गया है। समय के साथ भारत में अनेक भाषाओं का उद्भव हुआ- जैसे हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया और असमिया आदि। इन्हीं भाषाओं की समृद्ध परंपरा में हिन्दी ने एक ऐसी कड़ी के रूप में स्थान प्राप्त किया है, जिसने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे देश को संवाद के सूत्र में बांधा।

हिंदी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने लिखा है—
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को ज्ञान के,
निना निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हीय को शूल।।



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राजस्थान का माइनिंग सेक्टर प्रोएक्टिव मोड पर आ गया है। प्रदेश में खनिज से जुड़े सभी पहलुओं के योजनावद्ध क्रियान्वयन, समन्वय, प्रबंधन, प्रभावी मोनेटरिंग, एक्सप्लोरेशन, राजस्व, निवेश एवं रोजगार बढ़ोतरी, सस्टेनेबल माइनिंग, माइनिंग सेक्टर में देश दुनिया में हो रहे नवाचार और रवीनतम तकनीक और उसके प्रदेश में उपयोग सहित विभिन्न बिन्दुओं को लेकर विभाग द्वारा उच्चस्तरिय परियोजना मोनेटरिंग इकाई (पीएमयू) का गठन किया है। माना जा रहा है कि प्रदेश में क्रिटिकल एवं स्ट्रेटिजिक खनिजों के साथ ही प्रधान व अग्रधान खनिजों के विपुल पण्डारों को देखते हुए पीएमयू के गठन से खनिज क्षेत्र को और अधिक गतिशील बनाया जाएगा।

राशिफल बुधवार 8 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 1०:23 तक, हर्षण योग रात्रि 1:33 तक, तैतिल करण सायं 4:०8 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मेष, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरु-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।
राजयोग रात्रि 1०:28 से सूर्योदय तक है। आज अशून्य शयन व्रत है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:21 तक, शुभ 1०:48 से 12:16 तक, चर 3:1० से 4:38 तक, लाभ 4:38 से सूर्योदय तक।
राहूकाल: 12:0० से 1:30 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

भारतीय भाषा-भावों का संरक्षक “राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ”

भाषा में होनी चाहिए। इससे समझ बढ़ती है, भाषा-संस्कृति बचती है और बौद्धिक विकास बेहतर होता है। प्रत्येक भारतीय को कम-से-कम तीन भाषाएं आनी चाहिए— मातृभाषा, राज्य की भाषा और एक सम्पर्क भाषा। लोगों को न्याय पाने में भाषा की बाधा नहीं होनी चाहिए। इसलिए अदालतों में, सरकारी आदेशों आदि में स्थानीय भाषाओं का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। संस्कृत को भारत की सभ्यता और संस्कृति के मूल को परिभाषित करने वाली भाषा माना जाता है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। इतना ही नहीं अनेक विदेशी भाषाओं पर भी संस्कृत की छाप दिखाई देती है। संघ ने भाषाओं की जननी संस्कृत को भी उचित स्थान दिया है। संविधान सभा की प्रस्तावना में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का पक्षधर था, क्योंकि स्वतंत्र भारत के संघर्ष में भाषाई संघर्ष इतना विराट न हो कि भारत की विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृत भाषा का मूल विलुप्त हो जाए। भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को ही मान्यता प्राप्त है जबकि देशभर में 1369 बोलियां-मातृभाषाएं हैं।

वर्ष 2023 में भारत ने जब जी२0 सम्मेलन की मेजबानी की, तब उसने विश्व को “वसुधैव कुटुम्बकम्” का संदेश दिया। यह वाक्यांश केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन सभ्यता और समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। इसमें पूरे विश्व को एक परिवार मानने की भावना निहित है, जो भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है। यह महान विचार संस्कृत भाषा की उसी समृद्ध शब्दावली से उत्पन्न हुआ है, जिसने सदियों से मानवता, एकता और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश दिया है। भारत के भाव भारतीय भाषा में ही सच्चे प्रतीत होते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंचालक डॉक्टर मोहन भागवत कहते हैं कि संघ के पास भारत की सभी भाषाओं के उत्कृष्ट गीत हैं। इनकी संख्या लगभग 25–30 हजार है। संघ ने प्रारंभ से ही भारत की सभी भाषाओं को राष्ट्र की एकात्मक समृद्धि का आधार स्तंभ माना। संघ का स्पष्ट मत है कि भारत की सभी स्थानीय भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं। कोई भाषा क्षेत्रीय या कमतर नहीं है। राय्यों की भाषाएं सम्मान की पात्र हैं और उन्हें बढ़ावा मिलना चाहिए। कच्यों की शिक्षा की शुरुआत उनकी मातृभाषा या घर की

कहते हैं कि साने संघ विरोधी थे किन्तु सच्चे देशभक्त रहे, इसी आधार पर संघ ने इस गीत को शामिल किया। इसी तरह जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है गीत को सिनेमा में गाया गया है। इसे भी संघ गीतों में शामिल किया गया, क्योंकि इस गीत के पीछे भावना देश प्रेम और समर्पण की रही है। संघ की अखिल भारतीय बैठकों में देश के दूर-दराज क्षेत्रों से आए स्वयंसेवक कन्नड़, पंजाबी, मराठी, तेलुगु, असमिया, गुजराती, हिंदी, कश्मीरी और राजस्थानी भाषाओं से जुड़े होते हैं। इन विविध भाषाई पृष्ठभूमियों के बावजूद, इन बैठकों में संवाद का संचालन सदैव हिन्दी में किया जाता है। सभी स्वयंसेवक आपसी समझ और सहयोग से सहज रूप में संवाद स्थापित कर लेते हैं।

यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है, जो भारतीय भाषाओं के बीच एकता, समरसता और पारस्परिक सम्मान का जीवंत उदाहरण है। दक्षिण भारत में संघ कार्यों में संवाद का प्रमुख आधार स्थानीय भाषाएं होती हैं, जिससे न केवल कार्य की सहजता बढ़ती है बल्कि भारतीय भाषाओं की पहचान और सम्मान भी सुदृढ़ होता है। संघ ने तमिलनाडु में ‘देविगातमिल संगम’ नाम से एक संवाद-संबंधी संगठन में संघ कार्यो में संवाद का प्रमुख आधार स्थानीय भाषाएं होती हैं, जिससे न केवल कार्य की सहजता बढ़ती है बल्कि भारतीय भाषाओं की पहचान और सम्मान भी सुदृढ़ होता है। संघ ने तमिलनाडु में ‘देविगातमिल संगम’ नाम से एक संवाद-संबंधी संगठन में संघ कार्यो में संवाद का प्रमुख आधार स्थानीय भाषाओं होती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत के उत्कृष्ट विकास में भाषा से जुड़ी बाधाएं बनी रही। उस समय भारतीय शिक्षा णणाली और शासन-प्रशासन की भाषा में स्थानीय भाषाओं को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया। इसका चिंतन वर्ष 1965 की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में ‘भाषा नीति’नामक प्रस्ताव में रखा गया। जिसमें कहा गया कि देश का प्रशासन हमारी अपनी भाषा में चलाया जाए। विदेशी भाषा राष्ट्र की प्रतिभा को अविवक्ष्यक्त नहीं कर सकती न ही उसके विकास में सहायक हो सकती है। इस तरह संघ के इस प्रस्ताव में भारतीय

भाषाओं के प्रयोग को प्रखरता से रखा गया।

वर्ष 2०18 में नागपुर में आयोजित प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव में "भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन एवं संरक्ष" में यह मत रखा गया कि देश में प्रचलित विविध भाषाएं बोलियां हमारी संस्कृति, उदात्त परंपराओं, उत्कृष्ट ज्ञान, विपुल साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथ ही वैचारिक नव सृजन हेतु भी परम आवश्यक है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध लिखित साहित्य की अपेक्षा, कई गुना अधिक ज्ञान गीतों, लोकोक्तियों, लोक कथाओं और लोक परम्पराओं के रूप में होता है। आज भारत की अनेक भाषाएं एवं बोलियां विलुप्त हो चुकी हैं। कई बोलियों का अस्तित्व संकट में है। संघ की प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि देश की विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए सरकारों अन्य नीति निर्धारकों और स्वीच्छक संगठनों सहित समस्त समाज को हर संभव प्रयास करने चाहिए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संघ की भाषा संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस नीति में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करने का विकल्प दिया गया है। साथ ही, उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है। इस पहल से विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी और शिक्षा का दायरा अधिक सुलभ व सार्थक बनेगा। अब भाषा के भेदभाव के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से भारतीय मुक्त होंगे।

राजकाज से लेकर शैक्षणिक संस्थानों तक मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रयोग का प्रचलन संघ के सतत प्रयासों से बढ रहा है। डिजिटल तकनीक और एशियाई युग की संवाद-सुविधाओं ने इस दिशा में नई ऊर्जा प्रदान की है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से सुगम संवाद और सर्वसमावेशी विकास की दिशा में भारत आगे बढ रहा है। इस नवभारत की नींव में संघ का भाषा संरक्षण का समर्पण अतुलनीय है।

—डॉ. निमिषा गौड़, भाजपा नैनी, अ. प्रोफेसर कनोड्डिया पी. जी. महिला महाविद्यालय जयपुर।

माइनिंग सेक्टर प्रोएक्टिव मोड़ पर

है। पीएमयू के गठन के साथ ही खनन क्षेत्र से जुड़ी प्रमुख गतिविधियों को 7 सेक्टरों में चिन्हित किया गया है। प्रमुख सचिव माइन्स रविकान्त का मानना है कि सभी क्षेत्रों में समन्वित व तेजी से विकास के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को जोड़ते हुए पीएमयू का गठन किया गया है जिससे योजनावद्ध तरीके से तेजी से आगे बढ़ा जा सके। एक्सप्लोरेशन, ऑक्शन, शीश्र परिचालन, रिसर्च एवं डवलपमेंट, जीरो लॉस माइनिंग, इकोटूरिज्म की संभावनाओं, पेंपरलेस सहित विभिन्न गतिविधियों का समावेश किया गया है। विभाग के वरिष्ठ व विशेषज्ञ अधिकारियों को प्रभारी अधिकारी बनाया गया है। अतिरिक्त निदेशक मुख्यालय महेश माथुर को नोडल अधिकारी व अधीक्षण अभियंता सर्कतका जयपुर प्रताप मीणा को सहप्रभारी बनाया गया है। अतिरिक्त निदेशक भूविज्ञान आलोक जैन, वित्तीय सलाहकार गिरिश कछारा, अधीक्षण खनि अभियंता एनएस शक्तावत, जयगुरुबख्शानी, अधीक्षण भूवैज्ञानिक सुनील वर्मा, संजय सक्सेना आदि को इन दलों की जिम्मेदारी दी गई है।

खनिज क्षेत्र से जुड़े 7 प्रमुख सेक्टरों में से पहले एक्सप्लोरेशन व ऑक्शन का बनाया गया है। इस दल द्वारा कोमोडिटी, मिनरल ग्रेड, खनन के प्रकार सहित विभिन्न बिन्दुओं पर

कार्य करेगा। यह दल जीएसआई सहित तकनीकी विशेषज्ञों से समन्वय बनाते हुए एक्सप्लोरेशन से ऑक्शन आदि संबंधित कार्यों को और अधिक प्रभावी गति दी जा सकेगा। इसी तरह से ऑक्शनकिये गये माइनर और मिनरल ब्लॉकों को जल्द से जल्द परिचालन में लाने के लिए संबंधित स्ट्रेक होल्डर्स व खान विभाग सहित संबंधित विभागों से समन्वय बनाते हुए आवश्यक अनुमतियां दिलाने में सहयोग के साथ ही शीश्र परिचालन में लाने का कार्य करेगा। विभाग का जोर खनन क्षेत्र में राजस्व बढ़ाने और राजस्व में किसी भी तरह की छीजत को रोकना भी है और इसके लिए एक दल को मोनेटरिंग सहित आवश्यक सभी जिम्मेदारियां दी गई हैं।

डीएमएफटी के कार्य को गति देने और राशि के बेहतर उपयोग की मोनेटरिंग की जिम्मेदारी सौंपते हुए डीएमएफटी फण्ड के अन्य प्रदेशों में उपयोग को लेकर अध्ययन सहित योजना, क्रियान्वयन व मोनेटरिंग का फ्रेमवर्क तैयार करने को कहा गया है। राज्य सरकार का सस्टेनेबल माइनिंग पर जोर रहने के साथ ही बदलते परिवेश में यह आवश्यक भी हो गया है। सस्टेनेबल माइनिंग और ऑटोमेशन और तकनीक सेक्टर दल द्वारा स्टार रैंटिंग, बंद व कार्य नहीं कर रही खानों में इको टूरिज्म की संभावनाओं व क्रियान्वयन, डम्प

ओवरवर्डन आदि के रिसाइलिंगिं व उपयोग, श्रेष्ठ कार्य करने वाली खानों को प्रोत्साहित करने के साथ ही विभागीय सिस्टम को नई तकनीक से जोड़ने और पेंपरलेस करने की दिशा में कार्य दिया गया है।

इसी तरह से खनिज क्षेत्र में शोध एवं विकास को बढ़ावा देने, अधिकारियों के रियोरियेंशेन, खनन क्षेत्र से जुड़े स्ट्रेक होल्डर्स व विभाग के बीच साझा मंच उपलब्ध कराने, देश दुनिया में तकनीक में आ रही बदलाव से रबुर खास सहित इस तरह के कार्यों के लिए कन्क्लेव, सेमिनार, संगोष्ठियां, प्रशिक्षण कार्यक्रम की रुपरेखा व आयोजन का कार्य किया जाएगा।

राज्य सरकार ने पीएमयू गठित कर जिम्मेदारी तय करने के साथ ही सरकार की इच्छा शक्ति स्पष्ट कर दी है। अब पीएमयू टीम को जी जान से जुटते हुए माइनिंग के सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनाने के लिए जुट जाना होगा। माइनिंग सेक्टर आदि देश दुनिया में महत्वपूर्ण सेक्टर हो गया है। ऐसे में राजस्थान सरकार द्वारा प्रोएक्टिव रोल अपनाने की पहल निश्चित रूप से सराहनीय प्रयास माना जाना चाहिए। आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय में राजस्थान का माइनिंग सेक्टर अग्रणी भूमिका निभाने वाला होगा।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, (वरिष्ठ लेखक)

 	मेष	 	सिंह	 	धनु
 	मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।	 	शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव हो सकता है।	 	कारणों के व्यवहार के कारण मन विनम हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। आज व्यावसायिक आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।
 	वृष	 	कन्या	 	मकर
 	मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।	 	चन्द्रमा अशुभ भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय रहेगा।	 	घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
 	मिथुन	 	तुला	 	कुंभ
 	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संपावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।	 	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।	 	परिवार में मन को प्रसन करने वाले सदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आ्यवधान प्राप्त होंगे।
 	कर्क	 	वृश्चिक	 	मीन
 	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।	 	विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अकेले हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	 	आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संपावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।